सूरह — एक कहानी

सूरह अत-तक्वीर

लपेट दिया जाना

पूरा सफ़र — बारह अंजाम और एक सवाल —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 81 • 29 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

इज़श्-शम्सु कुव्विरत
1. जब सूरज लपेट दिया जाएगा।

व इज़ल्-मौऊदतु सुइलत। बि-अय्यि ज़म्बिन कुतिलत
8-9. और जब ज़िंदा गाड़ी हुई लड़की से पूछा जाएगा, किस गुनाह पर मारी गई?

'अलिमत नफ़्सुम्-मा अह्ज़रत
14. हर नफ़्स जान लेगा जो वो साथ लाया।

व मा साहिबुकुम बि-मज्नून
22. और तुम्हारा साथी मजनून नहीं है।

फ़-अयन तज़्हबून
26. तो तुम कहाँ जा रहे हो?

व मा तशाऊन इल्ला अंय्-यशा-अल्लाह
29. और तुम नहीं चाहते मगर जो अल्लाह चाहे।

बारह चीज़ें जो ख़त्म हो जाएँगी

बेटा, यह सूरह एक झड़ी के साथ शुरू होती है — बारह छोटी आयतें, हर एक 'जब...' से शुरू होती है, हर एक किसी जानी-पहचानी चीज़ के टूटने का बयान। इन्हें दुनिया के आख़िरी लम्हों की एक उलटी गिनती की तरह पढ़िए।

'इज़श्-शम्सु कुव्विरत — जब सूरज लपेट दिया जाएगा।' 'कुव्विरत', बेटा, वो लफ़्ज़ है जो सर पर पगड़ी लपेटने के लिए इस्तेमाल होता है — तह कर के, लपेट कर, उसकी रौशनी समेट दी गई। वो सूरज जिसने आपकी पूरी ज़िंदगी में एक सुबह भी नहीं छोड़ी — कपड़े की तरह लपेट दिया गया।

'व इज़न्-नुजूमुन्-कदरत — और जब सितारे गिर पड़ेंगे, बिखरे और मंद पड़ कर।' वो जमे हुए नुक़्ते जिनसे मल्लाह राह पाते थे, शायर लिखते थे, साइंस नक़्शा बनाती थी — गिरते हुए।

'व इज़ल्-जिबालु सुय्यिरत — और जब पहाड़ चला दिए जाएँगे।' जो चीज़ ना-क़ाबिल-ए-हिलान की मिसाल थी — चलती हुई।

'व इज़ल्-'इशारू 'उत्तिलत — और जब दस महीने की गाभन ऊँटनियाँ छोड़ दी जाएँगी।' बेटा, एक अरब के लिए दस महीने की गाभन ऊँटनी सबसे क़ीमती मिल्कियत थी — उसकी जमा-पूँजी, उसका रुतबा, उसके ख़ानदान का मुस्तक़बिल। और उस दिन वो बस खड़ी छोड़ दी जाएगी, बे-तवज्जोह। हर 'सबसे क़ीमती असासा' — प्रॉपर्टी फ़ाइल, पोर्टफ़ोलियो, कारोबार — बीच में ही छोड़ा हुआ।

'व इज़ल्-वुहूशु हुशिरत — और जब जंगली जानवर इकट्ठे किए जाएँगे।' जंगलों के जानवर तक, जमा किए हुए — बुलावे में कुछ नहीं भूला।

'व इज़ल्-बिहारू सुज्जिरत — और जब समुंदर भड़का दिए जाएँगे।' ख़ुद पानी जलता हुआ, बेटा — बुझाने वाला आग बन जाएगा।

'व इज़न्-नुफ़ूसु ज़ुव्विजत — और जब नफ़्स जोड़े मिला दिए जाएँगे' — हर शख़्स अपनी जैसी क़िस्म के साथ: सच्चे सच्चों के साथ, बदकार अपनी क़िस्म के साथ; हर नफ़्स आख़िर-कार उस सोहबत के साथ जो उसने ज़िंदगी में चुनी थी।

वो सवाल जिसने अरब को हिला दिया

और फिर, बेटा, इस कायनाती तबाही के बीचो-बीच — सूरज लपेटा हुआ, समुंदर जलते हुए — अल्लाह उलटी गिनती रोक कर एक छोटी लड़की के बारे में पूछते हैं।

'व इज़ल्-मौऊदतु सुइलत — और जब ज़िंदा गाड़ी हुई लड़की से पूछा जाएगा — बि-अय्यि ज़म्बिन क़ुतिलत — किस गुनाह पर वो मारी गई।'

बेटा, समझिए इस आयत ने दुनिया के साथ क्या किया। इस्लाम से पहले के अरब में कुछ क़बीले नौमौलूद बेटियों को ज़िंदा गाड़ देते थे — बेटी होने की शर्म में, या ग़ुरबत के ख़ौफ़ में। ये एक ज़ाती ख़ानदानी मामला था; किसी से कभी इस बारे में पूछा नहीं जाता था। उस लड़की का न नाम था, न क़ब्र, न कोई गवाह, न कोई मुक़दमा।

और अल्लाह एलान करते हैं कि जिस दिन सूरज लपेटा जाएगा और पहाड़ चलेंगे,

कायनात ठहर जाएगी — और उस छोटी लड़की से पूछा जाएगा: किस जुर्म में तुझे क़त्ल किया गया?

ग़ौर कीजिए, बेटा, अल्फ़ाज़ में छुपे हुए निहायत ख़ूबसूरत इंसाफ़ पर: सवाल उसी से किया जा रहा है, उसके क़ातिल से नहीं। उसे ही बोलने का मौक़ा दिया गया। क्योंकि जब मज़लूम बोलता है, तो मुजरिम पहले से ही मुजरिम ठहर चुका — उसके कहने को कुछ बचा ही नहीं। अल्लाह ने बे-ज़ुबान को पहली ज़ुबान अता फ़रमाई।

और महसूस कीजिए इस एक आयत ने क्या कर दिखाया: एक ऐसे मुआशरे को जो बेटियों को बे-इज़्ज़ती समझता था, बता दिया गया कि क़त्ल की हुई बच्ची रोज़-ए-क़ियामत की कार्रवाई का आग़ाज़ करेगी। नबी ﷺ ने आगे सिखाया: जिसके दो बेटियाँ हों और वो उन्हें अच्छी तरह पाले, तो वो और मैं जन्नत में इन दो उँगलियों की तरह होंगे। बेटियों को गाड़ने से ले कर बेटियों के जन्नत का दरवाज़ा बन जाने तक — एक ही नस्ल में।

बेटा, और उस तारीख़ी जुर्म से आगे एक सबक़ है। जब भी कमज़ोरों पर ज़ुल्म हो और कोई उसे रिकॉर्ड न करे — एक नौकर ज़लील किया जाए, एक मुलाज़िम की मज़दूरी मार ली जाए, एक बच्चा कुचला जाए, एक बीवी किसी मोअज़्ज़ज़ दरवाज़े के पीछे ख़ामोशी से तोड़ दी जाए — याद रखिए: फ़ाइल मौजूद है, और मज़लूम से बोलने को कहा जाएगा।

हर नफ़्स जान लेगा

उलटी गिनती जारी रहती है: 'व इज़स्-सुहुफ़ु नुशिरत — और जब नामे खोल दिए जाएँगे।' बेटा, वो रिकॉर्ड्स जो हम अभी नहीं देख सकते — खोल कर बिछा दिए जाएँगे। 'व इज़स्-समा-उ कुशितत — और जब आसमान खींच लिया जाएगा' — खाल की तरह उतार लिया जाएगा। 'व इज़ल्-जहीमु सु"इरत — और जब जहन्नम भड़काया जाएगा। व इज़ल्-जन्नतु उज़्लिफ़त — और जब जन्नत क़रीब लाई जाएगी।'

और फिर वो जुमला जिसकी तरफ़ ये बारह आयतें ले जा रही थीं: "अलिमत नफ़्सुम्-मा अह्ज़रत — हर नफ़्स जान लेगा जो वो साथ लाया।'

बेटा, यही इस कायनाती तबाही का पूरा मक़सद है: तमाशा नहीं, बल्कि इंकिशाफ़। ये सब इसलिए होता है ताकि आख़िर-कार, जब कोई तवज्जोह हटाने वाली चीज़ बाक़ी न रहे — न दिन नापने को सूरज, न मसरूफ़ रखने को दौलत, न छुपने को कोई सोहबत — हर एक नफ़्स ठीक ठीक देख ले कि वो इम्तिहान-गाह में क्या ले कर आया।

'अह्ज़रत' — जो उसने पेश किया, आगे बढ़ाया। बेटा, आज रात अपने आप से ख़ामोशी से पूछिए: अगर अभी नामे खोल दिए जाएँ, तो मेरे हाथ में क्या होगा?

रसूल और रसूल

सूरह का दूसरा हिस्सा इस ख़बर के मंबा (source) के दिफ़ा की तरफ़ मुड़ता है, और ये क़समों के सिलसिले से करता है: 'फ़-ला उक़्सिमु बिल्-ख़ुन्नस — तो मैं क़सम खाता हूँ पीछे हटने वाले सितारों की — अल्-जवारिल्-कुन्नस — जो चलते हैं और छुप जाते हैं। वल्-लैलि इज़ा 'अस्'अस — और रात की जब वो जाने लगे — वस्-सुब्हि इज़ा तनफ़्फ़स — और सुबह की जब वो साँस ले।'

बेटा, क्या बयान है तुलू-ए-फ़ज्र का: सुबह 'साँस लेती है'। जिसने भी फ़ज्र से पहले के आख़िरी अँधेरे में बाहर खड़े हो कर देखा है, वो ठीक यही महसूस करता है — गोया दुनिया साँस अंदर खींचती है, और रौशनी दाख़िल होती है।

और क़सम किस लिए? 'इन्नहू ल-क़ौलु रसूलिन करीम — बेशक ये एक इज़्ज़त वाले रसूल का कलाम है' — यहाँ मुराद जिब्रील हैं, जो इसे ले कर आते हैं — 'ज़ी क़ुव्वतिन 'इंद ज़िल्-'अर्शि मकीन — ताक़त वाले, अर्श के मालिक के हाँ बुलंद मक़ाम — मुता'इन सम्म अमीन — वहाँ इताअत किए जाते हैं, और अमानतदार।'

बेटा, जिब्रील की चार ख़ूबियाँ देखिए: ताक़त, बुलंद मर्तबा, दूसरों की तरफ़ से इताअत, और अमानत। यही वो रसूल है जो पैग़ाम लाया। और फिर: 'व मा साहिबुकुम बि-मज्नून — और तुम्हारा साथी मजनून नहीं है।'

'साहिबुकुम' — तुम्हारा साथी, बेटा। अल्लाह ये नहीं कहते 'ये नबी' या 'ये आदमी' — वो

उन्हें उनका साथी कहते हैं, वो शख़्स जिसके पहलू में वो चालीस साल रहे, जिसकी सच्चाई को उन्होंने हर सौदे में आज़माया, जिनका उनके दरमियान लक़ब ही अल-अमीन था। गोया ये कहा जा रहा हो: तुम उसे जानते हो। तुम इसे अपनी पूरी ज़िंदगी जानते रहे। अब ईमानदारी से बताओ।

'व लक़द र-आहु बिल्-उफ़ुक़िल्-मुबीन — और उन्होंने उसे रौशन उफ़क़ पर यक़ीनन देखा। व मा हुव 'अलल्-ग़ैबि बि-ज़नीन — और वो ग़ैब के मामले में बख़ील नहीं' — जो उन्हें दिया गया उसे रोकते नहीं। व मा हुव बि-क़ौलि शैतानिर्-रजीम — और ये किसी मरदूद शैतान का कलाम नहीं।'

तो तुम कहाँ जा रहे हो?

और फिर, बेटा, पूरे क़ुरआन के सबसे मुख़्तसर और सबसे चीर देने वाले सवालों में से एक आती है — अरबी में सिर्फ़ तीन लफ़्ज़: 'फ़-अयन तज़्हबून — तो तुम कहाँ जा रहे हो?'

इसके साथ थोड़ा बैठिए। हक़ सामने रख दिया गया: निशानियाँ, रसूल, पैग़ाम, वो दिन। और अब अल्लाह तक़रीबन हैरत के साथ पूछते हैं: तो फिर तुम कहाँ चले? कौन सी सिम्त बची है? तुम किस मुतबादिल (alternative) की तरफ़ चलने का गुमान रखते हो?

बेटा, ये सवाल अपनी ज़िंदगी के दोराहे पर अपने आप से पूछिए — जब आप कोई समझौता करने वाले हों, कोई बहाना बनाने वाले हों, एक बार फिर टालने वाले हों: फ़-अयन तज़्हबून? मैं इस के साथ आख़िर कहाँ जा रहा हूँ?

'इन हुव इल्ला ज़िक्रुल्-लिल्-'आलमीन — ये तो सिर्फ़ जहानों के लिए एक नसीहत है — लि-मन शा-अ मिन्कुम अंय्-यस्तक़ीम — तुम में से उस के लिए जो सीधा चलना चाहे।'

और फिर आख़िरी आयत: 'व मा तशाऊन इल्ला अंय्-यशा-अल्लाहु रब्बुल्-'आलमीन — और तुम नहीं चाहते मगर जो अल्लाह चाहें — जो रब्बुल आलमीन हैं।'

बेटा, दोनों आयतों को साथ थामिए, क्योंकि ये जोड़ी बन कर आती हैं। पहले: 'उस के लिए जो सीधा चलना चाहे' — आपका चुनाव असली है, और दरवाज़ा हर चाहने वाले के लिए खुला बयान किया गया। फिर: 'और तुम नहीं चाहते मगर जो अल्लाह चाहें' — और आपका चाहना भी उनकी इजाज़त के तहत है, उनकी तरफ़ से एक अता।

तो मोमिन इस का क्या करे? दो चीज़ें। वो अपनी सुस्ती का इल्ज़ाम कभी तक़दीर पर नहीं ढालता, क्योंकि पहली आयत कहती है: जो चाहे। और वो अपनी हिदायत पर कभी ग़ुरूर नहीं करता, क्योंकि दूसरी कहती है: तुम्हारा चाहना ही अता किया गया। बेटा, जब आप ख़ुद को नमाज़ पढ़ते, देते, गुनाह से रुकते पाएँ — तो ये मत कहिए 'देखो मैं कितना ज़ब्त वाला हूँ।' कहिए अल्हम्दुलिल्लाह — क्योंकि उन्होंने चाहा कि आप चाहें।

और देखिए सूरह ने कैसा सफ़र तय किया: इसकी इब्तिदा सूरज के लपेटने से हुई, और इख़्तिताम आप के अपने सीने के अंदर होता है, इस सवाल के साथ कि आप क्या चाहना चुनते हैं।

इस सूरह से क्या सीखा

1. जिस चीज़ पर भी आप भरोसा करते हैं वो तोड़ दी जाएगी: सूरज लपेटा हुआ, सितारे गिरे हुए, सबसे क़ीमती असासा जहाँ का तहाँ छोड़ा हुआ।

2. मज़लूम को बोलने का मौक़ा दिया जाएगा — क़त्ल की हुई बच्ची पूछ-ताछ का आग़ाज़ करती है; कोई ख़ामोश ज़ुल्म कभी रिकॉर्ड से बाहर नहीं।

3. बेटियों और कमज़ोरों की इज़्ज़त कीजिए: इस दीन ने एक ही नस्ल में बे-इज़्ज़ती को जन्नत का दरवाज़ा बना दिया।

4. कायनात इसलिए टूटती है ताकि हर नफ़्स आख़िर-कार जान ले कि वो क्या लाया — अभी पूछिए कि आपके हाथ में क्या होगा।

5. पैग़ाम ताक़त और अमानत के ज़रिए आया, और एक ऐसे शख़्स ने पहुँचाया जिसे वो चालीस साल से अल-अमीन जानते थे।

6. 'फ़-अयन तज़्हबून' हर दोराहे के लिए जेब में रखिए: मैं इस के साथ आख़िर कहाँ

जा रहा हूँ?

7. आपका इरादा असली है, और अता भी — तो न अपनी सुस्ती का इल्ज़ाम तक़दीर पर ढालिए, न अपनी हिदायत का सेहरा अपने सर बाँधिए।

या रब्बल-आलमीन, हमें उन में शामिल फ़रमाइए जो सीधा चलना चाहते हैं — और इस पर आपका शुक्र कि आपने चाहा कि हम चाहें। आमीन।